मधुबन ओम् शान्ति अंक 286 मई 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(16-04-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सर्व के शुभचिंतक, सदा बाप के गुण और कर्तव्य में समानता द्वारा संगमयुग की प्रालब्ध का अनुभव करने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप देश विदेश में विश्व कल्याण की सेवा के निमित्त बने हुए टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मधुबन बेहद घर में बापदादा की यह सीजन बहुत-बहुत निर्विघ्न, सबको अव्यक्त पालना से भरपूर करने वाली रही। अभी लास्ट में फिर भारत के सभी मुख्य भाई बहिनों ने 2016-2017 के लिए स्व-उन्नति और सेवा के बहुत अच्छे-अच्छे प्लैन्स बनाये। सभी में एक ही उमंग दिखाई दिया कि परमात्मा बाप के दिव्य कर्तव्यों के 80 वर्ष अभी पूरे हो रहे हैं, अब तो उसे दुनिया के आगे प्रत्यक्ष करना ही है। सब ब्रह्माकुमारीज़ को तो पहचान चुके लेकिन स्वयं मुक्ति जीवनमुक्ति दाता बाप आया हुआ है, उससे मुझे अपना जन्म सिद्ध अधिकार लेना है, इस अनुभूति की लहर अभी फैलानी है। मीटिंग की पूरी बुलेटिन तो आप सबके पास आ ही जायेगी।

अभी मैं डोन्ट थिंक भी नहीं कहती हूँ क्योंकि हमारे एक-एक विचार में अनेक सेवायें भरी पड़ी हैं। मीठे बाबा ने भले इस शरीर में बिठाया है, परन्तु कोई भी प्रकार की किसी भी आत्मा के साथ लेन-देन नहीं है। बाबा ने इससे फ्री कर दिया है। मन शान्त, बुद्धि स्थिर अडोल अचल, कभी डोलायमान चलायमान नहीं होती है। दिल बड़ी सच्ची साफ है। सच्ची दिल होने से साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। जितना लाइट रहो उतना माइट काम करती है। मेरा तो न कोई मित्र है, न कोई सम्बन्धी है जिससे मैं बातें करूँ इसलिए चुप रहना और बाबा से मीठी-मीठी बातें करना मेरे लिये इज़ी है। एक बल एक भरोसे पर चलना है।

अभी आप सभी से मेरा एक क्वेश्चन है मुक्तिधाम में रहते हो या मुक्तिधाम में जाना है? बोलो क्या करना है? मैं तो फील करती हूँ जब से बाबा के बने, बाबा ने वर्से में मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों दे दिया है। जो बात काम की नहीं है उससे मुक्त हूँ। जो कुछ करना है, बाबा को कराना है, उसमें जीवन सफल हो रहा है, तो जीवन में रहते जीवनमुक्त हैं। चलते-फिरते भी चलने का कोई आवाज नहीं। बाप शिक्षक सतगुरू की आज्ञाओं पर चलना माना रिगार्ड देने और लेने का रिकॉर्ड अच्छा रखना। स्वमान में रहना है, सबको सम्मान देना है। कोई मान देंगे, कोई अपमान करेंगे, यह तो होगा ही। प्लीज़ और कुछ भले नहीं करो सिर्फ मीठी वाणी बोलो। यह हर एक को अपने ऊपर मेहरबानी करनी है, अब कोई भी बातों में जाकरके अपना यह अमूल्य समय वेस्ट नहीं करना है। इस समय जो बाबा करा रहा है, वही करने का है। ब्राह्मणों के लिए सुस्ती भी एक बीमारी है, बाबा ने उससे भी छुड़ा दिया। अच्छे कर्म करने में सुस्ती नहीं होती है। अगर सुस्ती होगी तो अवाइड करेंगे, सुस्ती वाले अमृतवेला भी मिस करते, मुरली सुनते भी सिर पर बोझ दिखाई देता। मेरा शरीर भले कैसा भी है परन्तु फिर भी मैं देखती हूँ सुस्ती तो नहीं है? सुस्ती की बीमारी को जल्दी खत्म करना है, तभी तन यहाँ है पर मन बाबा में है, यह कितना अच्छा सहजयोग है। कितने रॉयल राजाई संस्कार बाबा ने बना दिये हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"सत्यवादी बनो"

1) दुनिया में अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। आप सबका फाउण्डेशन ही पवित्रता है। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वत: और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई। वह पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जानना, मैं आत्मा हूँ–अपने इस सत्य स्वरूप को जानने से आप सत्यवादी बने हो।

2) कहा जाता है ''सच्चे दिल पर साहेब राज़ी''। साहेब को राज़ी करने के लिए हर कर्म में सत्यवादी बनो। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले; और जो सब राज़ जानता है वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होता। वह संकल्प, वृत्ति, स्मृति, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करता।

3) जैसे बाप की महिमा का गीत है – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। ऐसे आप बच्चे भी मास्टर सत्यम् शिवम् सुन्दरम् हो। आपके दर्पण से (चेहरे से) सत्य और असली सुन्दरता का साक्षात्कार हो। सत्यता की शक्ति स्वरूप हो, आलमाइटी गवर्मेन्ट के आफीसर की स्मृति और नशे में रहकर अयथार्थ को यथार्थ में लाना है।

4) जैसे स्टेज पर ड्रामा दिखाते हैं कि कैसे विकार विदाई ले हाथ जोड़ते, सिर झुकाते हुए जाते हैं। अब यह ड्रामा प्रैक्टिकल विश्व की स्टेज पर, बेहद की स्टेज पर लाओ तब कहेंगे सर्विस। इसके लिए आपके अन्दर इतनी फ़लक हो जो महसूस करें कि सत्य के सामने हम सभी के अल्पकाल के यह आडम्बर चल नहीं सकेंगे।

5) राइट शब्द के भी दो अर्थ होते हैं। एक अर्थ है बर्थराइट अर्थात् वर्सा और दूसरा राइट और रांग की पहचान मिली है इसलिए बाप को ट्रुथ कहा जाता है अर्थात् सत्य वा राइट। सत्य की पहचान तब कर सकते हो जब लाइट, माइट और डिवाइन इनसाइट प्राप्त हो। अगर इसमें एक भी चीज़ की कमी है तो रांग से राइट तरफ नहीं चल सकते।

6) भक्ति मार्ग में सत्यनारायण की कथा प्रसिद्ध है कि जिसे अमूल्य चीज़ समझकर छिपाया, वह कखपन हो गई। यहाँ भी सत्य बाप जो सत्यनारायण बनाने वाला है, उनसे अगर जरा भी दिल का टुकड़ा छिपाकर रखा तो इस जीवन की नैया का क्या हाल होगा! सब कखपन हो जायेगा अर्थात् कुछ भी प्राप्ति नहीं होगी। हाथ खाली रह जायेंगे।

7) आजकल की भी जो महान् आत्मायें हैं, उनके हर बोल के पीछे सत्य वचन महाराज कहते हैं। चाहे व्यर्थ वा गपोड़ा भी लगता हो फिर भी समझते हैं कि ये महान आत्माओं के बोल हैं, तो यह महत्व रखते हैं। यह सत्य वचन महाराज का यादगार तभी चलता है जब पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चला है।

8) सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल पुरुषार्थियों का रॉयल रूप रीयल दिखाई देगा। आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। जिससे फाइनल रिजल्ट ऑटोमेटिकली आउट होगी।

9) बाप को दुनिया वाले गॉड इज ट्रुथ समझते हैं। सत्य को ही भगवान कहते हैं। बाप-दादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा है और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप जो सत् बाप, सत् टीचर, सतगुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, उस सत् बाप को सच्चाई ही प्रिय है। जहाँ सच्चाई अर्थात् सत्यता है वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य होती है।

10) सत्यवादी बच्चे दिल तख्तनशीन सर्विसएबुल अवश्य हैं लेकिन सर्विसएबुल की निशानी सम्बन्ध और सम्पर्क में सच्चाई और सफाई, हर संकल्प, हर बोल में दिखाई देगी अर्थात् ऐसी दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा का हर संकल्प सत् होगा, हर वचन सत् होगा। सत् अर्थात् सत्य भी और सत् अर्थात् सफल भी। उनका कोई भी संकल्प व बोल व्यर्थ व साधारण नहीं होगा।

11) सत्य बाप के पास सत्य ही स्वीकार होता है। बाकी सब पाप के खाते में जमा होता है, न कि बाप के खाते में। अब पाप का खाता समाप्त कर बाप के खाते में भरो; कदम में

पदमों की कमाई कर पद्मपति बनो। याद रखो, सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नांव हिलेगी, लेकिन डूब नहीं सकती।

12) सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन अगर कोई जरा भी असत्य कर्म करता है तो उसे प्रत्यक्ष दण्ड के साक्षात्कार अनेक वण्डरफुल रूप के होंगे। हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेगा। स्वयं अपनी ग़लती के कारण मन उलझता हुआ टिक नहीं सकेगा। वे अपने आपको, अपने आप सजा के भागी बनायेंगे। यह सब होना ही है, इसके नॉलेजफुल बनो, घबराओ मत। मास्टर सर्वशक्तिवान घबराते नहीं हैं।

13) अब ऐसा समय आने वाला है जो आपके सत्य अभ्यास के आगे अनेकों के अयथार्थ अभ्यास स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा कि आपका अभ्यास अयथार्थ है - लेकिन यथार्थ अभ्यास के वायुमण्डल, वायब्रेशन द्वारा स्वयं ही सिद्ध हो जायेगा। रीयल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। इस रीयल्टी की स्मृति से कर्म वा बोल में रॉयल्टी दिखाई देगी। सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा।

14) जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे रीयल्टी की रॉयल्टी वाली सत्यवादी आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात् नकली को असली बना देगा। ऐसी आत्मा के रीयल और रॉयल नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि, उनके स्वरूप को परिवर्तन करने का काम करेंगे।

15) परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरा सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

16) सच्चाई अर्थात् जो मैं हूँ, जैसा हूँ, सदा उस ओरीज़नल सतोप्रधान स्वरुप में स्थित रहना। रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं है। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 13-5-13 *मधुबन*

"मेरा तेरा को छोड़, मर्यादाओं पर चलकर अपने पुरुषार्थ को क्वालिटी वाला बनाओ, बाप समान बनो"

(दादी जानकी)

ईश्वर के बच्चे हैं, यह ईश्वरीय बचपन है यह कब भूलता नहीं है, उसके बच्चे हैं तो बहुत फायदा है। तो निश्चय के बल से हंसते गाते सारी जीवन बिताया है। जो कुछ हुआ आगे नहीं होगा, सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगा दो। जो बात पूरी हुई ऑटोमेटिक आगे बढ़ो, फुलस्टॉप है तो एक छोटी-सी बिन्दी। तो जो पुरुषार्थ में सब बातें याद हों, एक का दस गुना फिर सौ गुना, फिर हजार गुना, सिर्फ बिन्दी लगानी है आगे बढ़ना है। कोई भी लैंगवेज में ऐसे ही होगा ना ताकि कदम पर कदम रखने से, सी फादर फॉलो फादर करने से पदमापदम भाग्यशाली बनेंगे।

कोई ने पूछा बाप समान कैसे बनें? यह लक्ष्य रखना सहज नहीं है। जिस बाप को याद करने से बल मिलता है, विकर्म विनाश होते हैं, पर बाप समान बनने का शब्द ऐसे है, भले विचार करो। बाप ऊंचे-ते-ऊंचा है, वो सबको बड़े प्यार से देखता है। ईश्वरीय आकर्षण से शान्ति प्रेम खुशी शक्ति अन्दर में काम करती है, तो जीवन में सुख की अनुभूति ऐसी होती है जो कभी दु:ख न हो।

मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं यानि यह चाहिए, यह चाहिए से फ्री हो गई हैं, कर्मेन्द्रियों से कर्म वो करते हैं जो बाबा कराता है। श्रीमत प्रमाण चलने से इज़ी है बाप समान बनना। दिनप्रतिदिन जो बाबा से अनुभव हो रहा है, वह अनुभव दूसरे को भी हो तो बाबा कहे मेरा बच्चा मेरे समान है। प्यूअर फीलिंग, गुड विशश की भावना, फीलिंग हदों से पार बेहद में ले जाती है। बाबा अन्दर से सन्यास कराता है, अन्दर में कोई विकार न रहे। भगवान की यूनिवर्सिटी में अच्छा पढ़ने वालों को सीट मिलती है। तो एक दो को यह भाग्य और भगवान की पहचान देना ही सेवा है। जैसे बाबा देखते-देखते देह के बन्धनों से, दुनिया से मुक्त कराता है, यह ईश्वर की कृपा है, यह है विश्वास, दृढ़ संकल्प हो तो बाप समान बन जायेंगे, बाबा छोड़ेगा

नहीं। हम भी समान बनें, ताकि कोई मेरे को देखे तो बाबा को देखे क्योंकि मैं तो बाबा को ही देखती हूँ, बाबा की ही सुनती हूँ। जो आपने वायदा किया है, उन वायदों को निभाना है। प्रैक्टिकली बाप समान बनने के पहले हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी... इस बात की वैल्यु है।

तो किसी को है पुरुषार्थ का सुख, किसी को बाप की कृपा का सुख, वह दु:खहर्ता, सुखकर्ता बना देता है। जो संग में आये वह सुखी हो जाए। अपने आपको देखो, अपने को चेक करो, बाबा की कृपा यानि बाबा की नॉलेज से ईश्वरीय आकर्षण जो हमको खैंचके बैठी है, अनेक आत्माओं को अनुभव करायेंगे ना, तो बाबा कहेगा यह बच्चा तो मेरे समान है। हम नहीं कहेंगे बाप समान हूँ, बाबा ऐसा है। ड्रामा है माँ, वो है बाप, हम हैं एक्टर्स, फिर वन्डर, लगाओ जीरो बनो हीरो। एक हीरो एक्टर होता है, दूसरा हीरे मिसल लाइट, बेदागी हीरा। बाबा समान बनना है तो और कोई संकल्प न आये। सिर्फ बाबा को देखते रहो ना तो भी शरीर भूल जाता है। कोई संकल्प नहीं होता है। बाबा की जो मुरली सुनते हो उसी में खो जाना चाहिए। वन्डर है बाबा का और हर एक की सेवा का विशेष पार्ट है इसलिए किसी के लिए ऐसे शब्द कभी नहीं बोलो कि यह तो सुधरेगा नहीं, ऐसे शब्द मुख से बोलना माना बड़ी भूल करना, हमको शुभ भावना रखने में कोई खर्च नहीं है, वह काम करती है, इसमें बाबा याद आता है। मम्मा ने अपने संकल्पों की क्वालिटी बाबा समान बनाई इसलिए मम्मा प्रैक्टिकल बाप समान बनी।

कितनी भी कोई अच्छी आत्मा हो, कभी भी ईर्ष्या न आवे क्योंकि इसमें बड़ा खतरा है। कई बहनें इसके कारण घर चली गयी क्योंकि वह ईर्ष्या वश मम्मा को देख नहीं सकती थी। ज्ञान अमृत है, ज्ञानामृत पियेंगे, पिलायेंगे। मुझे जो भगवान बना रहा है वो बनना है, ऐसी क्वालिटी हो पुरुषार्थ की। याद की यात्रा में जीवन सफल की हुई हो। चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो...। बाबा का राहट हैण्ड बनना है, तो हैण्ड को राइट बनाओ तो वही बाबा का राइट हैण्ड बनेगा। दिल में कुछ और होगा तो राइट कर्म क्या करेगा? मतलब सच्चे रहो तो राइट कर्म होंगे तो राइट परिणाम निकलेगा।

बाबा ने सम्पूर्ण बनने के लिए पुरुषार्थ बहुत किया, तब तो सम्पूर्ण ब्रह्मा बना। ब्रह्मा मेरा बाप है वो विष्णु बनता है, पालना करता है तो शंकर तपस्या करने के बिगर क्या करेगा? ब्रह्माबाबा में तीनों का अनुभव होता था। सुबह को बाबा ब्रह्मा के रूप में, दिन में विष्णु के रूप में और शाम को शंकर, इमर्ज करो बाबा ऐसे दिखाई पड़ता था। मुरली सुनाना, श्रीमत द्वारा पालना करना। अपना एक गीत है भले सतयुग में हीरे जवाहरातों के महल में होंगे, पर कौन सुनायेगा मुरली वहाँ...। तो संगम पर सबसे खुशी की बात है, हमारी यज्ञ से पालना हुई और ब्राह्मण बनाया है सेवा के लिए। हरेक का पार्ट अपना होता है इसलिए कभी यह ख्याल नहीं करो यह अच्छा है, यह न अच्छा है, तू अपनी कर। तो हरेक अपने से पूछे मैं कौन-सी क्वालिटी हूँ? क्वालिटी वाला हूँ या क्वान्टिटी वाला हूँ? जो सेकेण्ड में देह के सम्बन्ध से न्यारा... वह है क्वालिटी। तो हरेक अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाता है। लॉ पर चलने वाला लवफुल है। मर्यादाओं पर चलने वाला, मेरा तेरा को छोड़ने वाला क्वालिटी वाला है। तो हरेक अपना पुरुषार्थ करके ऐसा अपने आपको क्वालिटी वाला बनाये, आगे बढ़ाये।

कुछ भी हो क्वालिटी चेंज न हो, इसके लिए सम्भलके चलना है। नाटक में पार्ट पूरा हुआ है, अब घर जाना है, यह दुनिया विनाश कब होगी, यह संकल्प करना नहीं पर मैं रेडी हूँ, बैग-बैगेज रवाना कर दिया है क्योंकि फर्स्टक्लास के पैसेंजर अपना सामान पहले ही भेज देते हैं फिर जाके आराम से बैठते हैं। कई हैं जाते समय कहेंगे मुझे पैकिंग करनी है, तो यह कौन-सी क्वालिटी है? अरे, अजुन पैकिंग ही नहीं की है। कई हैं जो बुकिंग कराके कैन्सिल करा देते हैं। रॉयल पैसेंजर रॉयल्टी से जाते हैं। तो स्वच्छता और सच्चाई, धर्म और कर्म का बैलेंस हो। हमारा धर्म है सच्चाई, कर्म में है स्वच्छता। ऐसे ही प्यारे बाबा ने मीठे बाबा ने क्या से क्या बना दिया! बाबा को बच्चों के लिए कितना ख्याल है!

दूसरा क्लास

"सजनी वह है जो सदा सुहागिन है, बच्चा सुपात्र है"

बाबा ने माताओं को आगे रखा, इस दुनिया वालों ने पीछे कर दिया था। कोई गरीब है या साहूकार है, कोई भी है, कहाँ से भी है, बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। बाबा ने अपना बनाके कहा तुम मेरी हो और हम कहते हैं बाबा तू मेरा है और मेरा कुछ नहीं है। मैं आत्मा हूँ, मेरा पिता परमात्मा है, सर्वशक्तिवान है। मैं पदमापदम भाग्यवान हूँ, एक बाबा

दूसरा न कोई – यह व्रत बहुत अच्छा रखने से बेटी सजनी हूँ तो सदा सुहागिन हूँ, बेटा हूँ तो सुपात्र हूँ। अब कहाँ आँख नहीं जाती, नज़र नहीं जाती क्योंकि एक बाबा मिला सब कुछ मिला, कोई कमी नहीं है। बाबा ने माताओं की बहुत महिमा की है क्योंकि त्याग तपस्या में आगे जाती हैं फिर सेवा से तो सारे कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो गया, कर्मबन्धन कट गये, हम फ्री हो गये। जीवन में होते पुरानी और पराई बातों से मुक्त हुए हैं तो शान्तिधाम में मुक्ति और इन सब बातों से मुक्ति है तो सतयुग में जीवनमुक्ति बाबा ने वर्से में दे दी है। तो जिन्होंने ऐसे श्रेष्ठ कर्म करके अपनी जीवन यात्रा सफल की है उसकी बधाइयां और माया को विदाई।

तीसरा क्लास

"नॉलेज को सिमरण कर रीयल्टी और रॉयल्टी को अपनाते अपनी पर्सनैलिटी को डेवलप करो, रॉयल बनो"

मैं कभी-कभी सोचती हूँ किसकी महिमा करूँ! संगमयुग की या अपने भाग्य की या बाबा की? त्याग से भी भाग्य बनता है, सेवा से भी भाग्य बनता है। भगवान के बच्चे हैं, भाग्यविधाता के बच्चे हैं। सेवा में चाहे याद में अच्छी रेस है। सेवा भी एक्यूरेट सब खुश रहें, जी खुश तो जहान खुश, हम खुश तो सब खुश। इतनी खुशी मेरे पास हो जो जहान भी खुश हो। रावण माया ने अपना अच्छा जलवा दिखा करके सारा राज्य भाग्य छीन लिया। हम बाबा से मिला हुआ राज्य भाग्य गँवा बैठे। अभी बाबा कहते बच्चे चलो बीती सो बीती, फिर से राज्य पा लो, भाग्य बना लो। भाग्य विधाता द्वारा भाग्य बनाने का भण्डारा बाबा ने खोला है, उस भण्डारे के हम मालिक हैं।

भक्तिमार्ग में ईश्वर की महिमा गाते हैं, पर ईश्वर के बच्चे ऐसे बाप की महीमा को धारण करते हैं, हम सिर्फ गाते नहीं हैं। भक्तिमार्ग में सिर्फ गाते हैं, ज्ञान मार्ग में हम महिमा योग्य बनते हैं। ऐसी माताओं का संगठन देख बाबा साकार में बहुत खुश होता था। समय और संकल्प सफल करो। समर्पण होने से सफल कर सकते हैं। समर्पण माना यज्ञ में रहना, ऐसी बात नहीं है, बाबा कहते हैं कहाँ पर भी रहो पर ट्रस्टी हो करके रहो, मेरा कुछ नहीं। भले कोई यहाँ हो लेकिन ट्रस्टी का संस्कार न हो तो ऐसे क्या काम के? इसलिए अन्दर में विदेही रहने की प्रैक्टिस हो। फिर सम्बन्ध में, कारोबार में ट्रस्टी। बड़ा सहज है पुरुषार्थ, कोई मेहनत नहीं है परन्तु अगर उसको तरीका आ जाता है तो मेहनत नहीं है। जैसे ड्रायवर गाड़ी चलाने वक्त बहुत अटेन्शन रखता है, धीरज भी रखता है। कार को आगे और पीछे दोनों तरफ लाइट होती है। आगे जा रहा है तो लाइट है पीछे वाले देख रहे हैं, कैसे आगे जा रहा है। साइलेंस में ही ड्रायविंग करते हैं, न इधर देखते हैं, न उधर देखते हैं, न पीछे देखते हैं सिर्फ सामने देखते हैं क्योंकि टाइम पर पहुँचना है और कोई मेरे से आगे जाना चाहता है तो भले जाओ।

हम भी आत्मा ड्रायवर बनके इस शरीर रूपी कार को चला रहे हैं, पर ड्राइविंग लाइसेंस चाहिए, ऐसे नहीं चलाने को मिलेगा। तो सहज पुरुषार्थ माना न इधर देखो, न उधर देखो, न पीछे देखो। तो बड़ा सम्भलके चलना होता है, कोई इशारा मिलता है वेट एण्ड सी, जल्दी नहीं करो। उतावलापन ठीक नहीं होता है, खतरा है। कभी बिजी रहने से बात को टालते हैं, बहाना बना देते हैं, यह भी ठीक नहीं है इससे पकड़े जायेंगे इसलिए कभी-कभी बाबा धर्मराज की बातें सुनाता है। बाबा भी साक्षात्कार करायेगा, मैंने तुमको यह यह करने को कहा था, ऐसे ऐसे करने लिए कहा था पर तुमने वह नहीं किया इसलिए अभी खाओ सजा और पद भी गंवाओ। तो हमको अभी ऐसी गफलत नहीं करनी है, इससे हमको ही नुकसान होगा इसलिए लापरवाही नहीं करो। बहुत सारे श्रेष्ठ कर्मों को करके बहुत ऊंच पद पाओ, यह हमारी रॉयल्टी है।

रचता और रचना की नॉलेज के सिमरण से रीयल्टी और रॉयल्टी को अपनाते अपनी पर्सनैल्टी को डेवलप करो, रॉयल बनाओ। ऐसी स्मृति रहे – मैं कौन? तो लाइट आ गयी और मेरा कौन? तो माइट आ गयी। यह लाइट माइट

ही तो सेवा कर रही है। औरों को समझाने के पहले अपने को लाइट बनाके माइट खींचके लाइट हाउस का काम करें, तो बाबा की बहुत दुआयें मिलेंगी। लाइट बनने से सेवायें शुरू हो गई यानि सारा विश्व बाबा को जानने लगे। मेरे अन्दर अभी यही आश है कि मेरे बाबा को दुनिया देखें। जब तक आत्मा शरीर में है मैं देखूँ दुनिया की कोई आत्मा भले परमधाम में चले, सुखधाम में न भी आवे, पर भगवान लेके जा रहा है, यह आवाज़ हरेक के दिल से निकले, भगवान आया है शान्तिधाम ले जाने के लिए। तो चिल्लाके नहीं मरेंगे। मरना तो सबको है, पर मरो तो कैसे मरो, वह बाबा ने सिखाया है। आप मरे मर गई दुनिया...। मरना तेरे गले में, जीना तेरे गले में...अर्थात् इनकी बातों के सिवाए और कोई बात याद नहीं। ओ.के.।

20-9-15

"बाबा की दृष्टि से हमारी सृष्टि बदल गई, साधारण माता से ब्रह्माकुमारी वा देवी बन गई" (गुल्जार दादी)

सभी कौन-सी आत्मायें बैठी हैं? खुशनसीब। हमारा नसीब कितना खुश है, जो बाबा हमें निमंत्रण देके सुनाने के लिये बुलाते हैं आओ सुनो। भगवान किसको बुलावे तो आके सुनो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा! बाबा बुलाते हैं प्रेजेन्ट मार्क है ना निशानी। तो जैसे बाबा निमंत्रण हमको देता है कितने प्यार से, एक एक बच्चे को कितना दिल से प्यार करता है। थोड़ा दिन भी कोई नहीं आयेगा तो कहेगा क्यों नहीं आता? आपको भी फील होता है ना। अगर कोई भी दिन मिस करो तो सारा दिन वो चलता तो है, याद तो आती है ना। जैसे कोई चीज़ बहुत जरुरी है मानो और वो मिस हुई है, ऐसे हमारी जीवन बाबा ने बना दी है। बाबा कहता नहीं है क्यों नहीं आते हो, क्या है? वह हिसाब लेना होगा तो कोई दिन अचानक लेगा, लेकिन रोज़ याद रखता है कि आज क्लास छोटा था, आज कम थे, तो जो कम होंगे उसको कितना बाबा ने याद किया। ऐसे मिस होना नहीं है क्योंकि भगवान आवे हमको सुनाने कुछ और मैं कोई भी काम से या सुस्ती से नहीं आऊं, तो कौनसी बात अच्छी लगती है? भगवान आया है अपने परमधाम से और हम क्या क्या कर रहे हैं? तो भगवान का प्यार देखो कितना है! वो तैयार होके आता है टाइम पर और कितने प्यार से एक एक से मिलता है।

बाबा की दृष्टि ही सब कुछ है। दृष्टि से हमारी सृष्टि बदल गई। देखो, मातायें अभी क्या लगती हो! ब्रह्माकुमारी। साधारण माता नहीं, घर-गृहस्थी वाली नहीं, देवियों के रूप में। वृत्ति दृष्टि सब बदल गई और सबके दिल से बार-बार क्या निकलता - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। और बाबा का भी रेसपांस कितना अच्छा मिलता है। हम कहें बाबा, तो फौरन बाबा सुनेगा और दृष्टि देगा। तो बाबा का भी प्यार एक एक से बहुत जिगरी है। आप कभी भी कोई कारण से नहीं आओ लेकिन बाबा जरुर याद करता है। आज बच्चा नहीं मिला, आज बच्चा दिखाई नहीं पड़ा, तो इतना प्यार बाबा दे रहा है तो हम भी बाबा को प्यार का रेसपांड देते हैं जो बाबा ने कहा वो किया। और क्या चाहिए रेसपांड - बाबा का कहना हमारा करना। ऐसा ही है ना। आज सारा दिन चलते फिरते आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने यह कहा, तो यह बाबा की कमाल है। जो हरेक को याद करता, आप पूछेंगे बाबा मैं याद में रहती हूँ तो कहेंगे पहले आप, प्यार है ना। लौकिक में भी बच्चा कितना भी दूर हो लेकिन अगर उनका प्यार है जिगरी, तो वह हमेशा बाबा के सामने ही है। बाबा के सामने वो है और वो भी बाबा के सामने है। दिल का प्यार है ना यह, इसमें रूकावट की कोई बात ही नहीं है। दिल से दिल मिलने की बात है। इसमें टिकट मिली नहीं मिली इसमें पहुँच नहीं पाये, इसमें यह बात नहीं है। हमारी दिल में बाबा, बाबा की दिल में हम। पक्का ना। हमारा स्थान कौनसा है? बाबा की दिल। हरेक बाबा के दिल में समाया हुआ है ना तब तो जिगर से मेरा बाबा कहते हो।

अरे, मेरा बाबा कौन है वह जानो तो सही। नशा कितना है! वाह मेरा बाबा। हरेक उसको याद करता है, हरेक उसको याद करके कितना हल्के हो जाते हैं, कितनी खुशी होती है, फिर यह लाइफ ऐसे चलती है जैसे कोई चला रहा

है। खुशी तो हमारे जीवन में है ही है, ऐसे नहीं कभी है, कभी चली जाती है। जाने की चीज़ ही नहीं है। है ना ऐसे कुमारियाँ, हाँ अच्छी लगती है। बाबा कहे कुमारियाँ, कुमारियों को बाबा कितना याद करता है, यह बच जावें। हमारे से ज्यादा बाबा को ओना रहता है मेरा बच्चा माया से बचा रहे, कहाँ नीचे ऊपर न हो। पहले बाबा याद करता है, तो खुशी होती है यानी भगवान हमको याद करता, हम तो याद करते ही हैं लेकिन भगवान किसको याद करता? हम एक एक को याद करता ना। मेरे बच्चे, मेरे मीठे बच्चे, मेरे लाडले बच्चे, क्या नहीं टाइटल देता, वह नशा रहे ना, सारा दिन तो वो दिन कैसा बीतेगा, स्वर्ग तो उसके आगे कुछ नहीं। स्वर्ग के सुख क्या भी हो लेकिन संगम का सुख जो है परमात्मा से मिलने का, वो कोई युग में नहीं। और हम संगम निवासी हैं, खास मधुबन को भाग्य मिला हुआ है, मिलने का स्थान यही वो स्थान है।

एक वर्ष या एक भी मास नहीं आओ मानो तो आपको चैन आता है? घर में याद रहेगा, आज गये नहीं है, आज गये नहीं है क्योंकि बाबा का प्यार इतना मिलता है, प्यार माना कोई ऐसे भाकी पहनें, इसको नहीं कहा जाता है। प्यार है दिल का, जो बैठे हुए भी कर सकते हो, बाहर अलग होते हुए भी दिल में आ सकते हो। तो बाबा का दिल हमारा दिल है। हम कहाँ रहते हैं? बाबा के दिल में। और कहाँ रहेंगे, सबसे अच्छा स्थान तो बाबा का दिल है और वहाँ ही हम रहते हैं। हरेक यही कहता है ना मेरा बाबा, थोड़ा भी ऐसे ऐसे कहो ना, तो वो कैच करते हैं जल्दी। क्यों जरुर उठता है क्योंकि मेरा बाबा समझते हैं ना हरेक। जो भी आता है तो पहले तो यह अनुभव करता है, मेरा बाबा है तभी तो चल रहे हैं। नहीं तो चले ही नहीं। तो सभी बाबा को देखके खुश होते हैं और बाबा मेरे को देखके खुश होते हैं, हरेक समझते हैं ना मेरे को। बाबा को मेरे बिना चैन नहीं और हमको बाबा के बिना चैन नहीं। दोनों का सम्बन्ध है ही। कोई कहेगा बाबा भूलता है, भूलता तो नहीं ना, अभी यह तो कोई नहीं कहेगा ना। मेरा है तो भूलेगा कैसे।

तो सभी खुश हैं, बस खुशी नहीं गँवाना। खुशी गँवाना माना कुछ दाल में काला है। और क्या है! खुश रहें हल्के फुल्के ऐसे जैसे हवा में, सितारे देखो कितने चमकते हुए दिखाई देते हैं। हमेशा खुश रहना चाहिए, खुशी नहीं जानी चाहिए क्योंकि संगमयुग ही है जिसमें ज्यादा में ज्यादा खुशी रह सकती है। नोट करते हो ना, संगमयुग की विशेषता क्या है? खुश रहना। और क्या करना है। दु:ख सब जो है वो बाबा को दे देते हैं बाबा इसको आप सम्भालो। हमने बहुत सम्भाला अभी तो आप सम्भालो। और इतना प्यार से कहते हैं बाबा को, तो बाबा को सम्भालना ही पड़ता है। बाबा को हक से मेरा समझने से खुशी का दरवाजा खुला है। भगवान मेरा हो गया, बाकी क्या चाहिए। पूछने की जरुरत ही नहीं कि खुश हो, पूछना माना जैसेकि इनसल्ट। फिर भी देखा जाता है कभी कोई बात आ गयी तो भी खुश रहते हैं? बात को बात की तरह से सुनो और उसका हल करके हल्के रहो। बाकी दिलशिकस्त भी नहीं होना, होना मुश्किल लगता है। नहीं। बाबा भगवान मिला और मुश्किल? फिर कब सहज होगा, भगवान मिले तो भी मुश्किल रह जाये तो कब मिलेगा? सहज होगा कब? तो है मुश्किल! सहज है। मेरा है ना। जिगर कहता है मेरा बाबा। ऐसे है ना! सब खुश तो है ही, ऐसे कहेंगे ना। खुशी क्यों छोड़े, अच्छा कुछ भी बात हुई तो खुशी छोड़ने से होता है कुछ, और ही दूसरी बातें भी बनके आती हैं इसलिए खुश। हमारे शक्ल से कभी खुशी नहीं जानी चाहिए। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"पाण्डव अर्थात् विजयी, मायाजीत, सदा एक बाबा से सच्ची प्रीत रखने वाले"

1) पाण्डव अर्थात् एक बाबा से प्रीत बुद्धि। दिखाते भी हैं भगवान से पाण्डवों की सच्ची प्रीत थी, उसमें निमित्त एक अर्जुन का नाम आया है। लेकिन आप सब अर्जुन हो, जिनकी एक बाबा से ही प्रीत है इसलिए विजय हुई पड़ी है। गाते भी हैं बाबा आप ही हमारे मात-पिता, बंधू-स्वामी, सखा हो। आपके बिना हमारा और कोई नहीं है। सब सम्बन्ध एक आप से हैं, चाहे कौरव अक्षोणी सेना थे फिर भी विजयी पांच पाण्डव हुए। आप सबकी बुद्धि में है - एक बाबा दूसरा न कोई। सभी

पाण्डवों का बाबा से पक्का वायदा है ना कि बाबा एक आप ही हमारे सर्व सम्बन्धी हैं! आप ही हमारे साथी हो, गाइड हो, हमें मुक्तिधाम, जीवनमुक्ति धाम में ले जाने वाले एक आप ही हो। आप ही बाप, टीचर, सतगुरू के रूप में सर्व सम्बन्धों से मिलते अथवा प्यार करते इसलिए आप से ही हमारी सच्ची प्रीत है, जिस प्रीत में ही सभी प्राप्तियाँ समाई हुई हैं।

2) आप सबने यह पक्का-पक्का वायदा किया होगा कि ओ मीठा बाबा आप ही हमारे नयनों में हो, मस्तक में भी आप हो, इस जीवन में आपके बिना कोई दूसरा नहीं इसलिए आप ही हमारे जीवन साथी हो। और आप से हमें यह वरदान है कि हम हमेशा आप के साथ प्रीत बुद्धि हैं और सदा विजयी पाण्डव हैं। हमने कभी माया से हार नहीं खाई है और न कभी हार खायेंगे। अगर कोई की गलती से हार हो भी गई हो तो आज ऐसा पक्का व्रत लो अथवा प्रतिज्ञा करो कि जीवन में बाबा के सिवाए न कोई साथी है, न कोई साथी रहेंगे। ''मैं और मेरा बाबा तीसरा न कोई'' - यह पक्का वायदा करो। माया से न कभी हार खायेंगे, न माया को अपने पास बुलायेंगे, न आने देंगे। जो ऐसे मायाजीत हैं उनका ही नाम है पाण्डव। तो आप सभी अपने को ऐसा विजयी पाण्डव, विजयी अर्जुन समझते हो ना!

3) भगवान कहता - हे अर्जुन! तुम सबसे मुक्त हो। जो अपने को सबसे मुक्त समझते हैं और प्रैक्टिकल सर्व पुराने बन्धन, पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार, पुरानी जो भी कोई कमियाँ हैं, उन सभी पर विजयी हैं, जिसकी बुद्धि में एक ही बाबा बसता, दूसरा न कोई, जिसका साथी है भगवान, उसका क्या करेगा आंधी तूफान। अगर जीवन में कोई माया आयी भी हो तो बाबा से माफी लेकर पक्का व्रत लो, वायदा करो कि हमारी एक ही बाबा से सर्व सम्बन्धों की प्रीत है, दूसरा न कोई। अगर ऐसी पक्की-पक्की अपनी दृष्टि वृत्ति बनायेंगे और ऐसा पक्का वायदा करेंगे तो दादी आप सबको विशेष इनाम देगी।

4) आप सभी अपने को ऐसा ही दर्शनीय मूर्त बनाओ जिसका सब गायन करें। दर्शनीय मूर्त वही होते जिनकी बुद्धि में सिवाए एक बाबा दूसरा न कोई। दर्शनीय मूर्त वही होते जिन्हों में कोई भी विकार का अंश न हो। विकारों पर जीत, विकर्माजीत दर्शनीय मूर्त बनते हैं क्योंकि यह विकार ही महा वैरी शत्रु हैं। कहते हैं काम और क्रोध... लेकिन लोभ और मोह भी कम नहीं हैं। तो आप सब अन्तर्मुखी बन अपने आपको चेक करो और नोट करो कि बरोबर हम पक्के पक्के बाबा के विजयी रत्न हैं? विजयी अर्थात् जिसमें न काम विकार का अंश हो, न क्रोध, न लोभ, न मोह, न कोई देह अहंकार हो। इतना अपनी जीवन में हरेक परिवर्तन करके जाओ तब कहेंगे भट्ठी की सफलता।

5) हम सबके विजयी बनने का ही यादगार यह गीता शास्त्र है। कोई काम नहीं, कोई क्रोध नहीं, कोई लोभ नहीं, कोई मोह नहीं...। जैसे बाबा आप हो, हम आप जैसा पक्का पक्का राजयोगी बनेंगे। आप जैसा दर्शनीय मूर्त बनेंगे। प्रवृत्ति में हो, दफ्तर में जाते, धन्धाधोरी करते परन्तु रिकॉर्ड हो कि हम नष्टोमोहा, स्मृतिर्लब्धा हैं। किसी में मोह नहीं, इस देह में भी मोह नहीं। इस देह का अभिमान भी नहीं। देह-अभिमान का त्याग कर देही-अभिमानी बनो। दृष्टि में भी सदा बाबा बाबा ही हो। तो ऐसे पक्के पाण्डवों को बाबा इनाम देगा, इसलिए अन्तर्मुखी भव। अन्तर्मुखी सदा सुखी, मायाजीत, मायामुक्त बनो। तो दृष्टि, वृत्ति सबमें एक बाबा बसे, दूसरा न कोई। यह जरा भी रिपोर्ट न हो कि इसमें फैमिलियरिटी है, इसकी दृष्टि, वृत्ति ठीक नहीं है। एक तो यह रिपोर्ट बन्द हो। दूसरा अगर थोड़ा भी कोई में गुस्सा हो तो उसका भी त्याग करो। काम और क्रोध पर विजयी बनो तो लोभ मोह पर विजयी बन ही जायेंगे। इसका पुरुषार्थ है साइलेन्स की शक्ति, सिर्फ अन्तर्मुखी बन शान्तचित हो बाबा से कनेक्शन जोड़कर रहो तो शक्ति जमा होती जायेगी।

6) माया को चैलेन्ज करो कि तुम जरा भी हमें परेशान नहीं कर सकती। दृष्टि में बाबा, वृत्ति में बाबा और व्यवहार में बाबा..., बस बाबा ही बुद्धि में हो तो हर एक को अनुभव होगा कि यह तो विजयी हैं, तब कहेंगे मरजीवा ब्राह्मण। तो आप सभी ब्राह्मण पाण्डव अर्थात् मुक्त और जीवनमुक्त बनो तब आपसे हर एक अनुभव करेंगे, साक्षात्कार करेंगे कि यह तो पक्के योगी, दर्शनीय मूर्त हैं। स्वयं भी इतना ही अपने को महान आत्मा समझेंगे। ऐसे पक्के योगी ही बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। अच्छा -ओम् शान्ति।